IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत की गतिशील विदेश नीति : मोदी शासन काल के संदर्भ में एक अध्ययन

रामचन्द्र डूडी

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

शोध सारांश :–

विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत विश्व में सुदृढ़ एवं सशक्त विदेश नीति के लिए जाना जाता है, साथ ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुकूल अपना सामंजस्य स्थापित करने में भी भारतीय विदेश नीति सदैव सफल रही है। 1947 से वर्तमान तक भारत को विदेश नीति के क्षेत्र में अनेक मुकाम हासिल हुए हैं।

स्वतंत्रता से वर्तमान तक भारतीय विदेश नीति का निरंतर विकास हुआ है। यह एक गतिहीन विदेश नीति न होकर गतिशील विदेश नीति है। जैसे–जैसे भारत के राष्ट्रीय हितों में विदेशी परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन आया है, वैसे ही विदेश नीति का स्वरूप भी बदल गया है।

मई 2014 में शपथ ग्रहण से ही नरेन्द्र मोदी ने विदेश नीति को प्रशासन का आधार बना दिया है, वह विदेश नीति और घरेलू परिवर्तन के बीच एक करीबी गठजोड़ स्थापित करने में काफी सफल रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय विदेश नीति ने एक मजबूत राष्ट्र के रूप में भारत की संभावित विशेषताओं को फिर से स्थापित करने के लिए एक नये दृष्टिकोण, गतिशीलता और इनके समावेशन पर जोर दिया है। भारत गुट निरपेक्षता के अतीत से बाहर निकल चुका है तथा अपने हितों के अनुरूप अन्य राष्ट्रों से सम्बन्ध बना रहा है। भारतीय विदेश नीति नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सफलताओं के चरम पर पहुँच रही है व वैश्विक पटल पर भारत के प्रभाव में निरन्तर वृद्धि हो रही है। नरेन्द्र मोदी ने वैश्विक व्यवस्था में भारत की भूमिका को बदलने का प्रयास किया है तथा उन्होंने ऐसे संकेत दिये है कि भारत अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था की प्राथमिकताओं को परिभाषित करने की इच्छा और योग्यता रखता है।

संकेताक्षरः–राष्ट्रीय हित, गतिशील, यथार्थवादी, गुट निरपेक्षता, उदारीकरण, वैक्सिन मैत्री, वसुधैव कुटुम्बकम, ऑपरेशन गंगा, सार्क देश, सॉफ्ट पॉवर।

प्रस्तावना :–

किसी भी देश की विदेश नीति उसके राष्ट्रीय हितों के अनुरूप दूसरे देशों के साथ आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा सैनिक विषयों पर पालन की जाने वाली नीतियों का समुच्चय है। प्रत्येक देश की स्थिति व वैश्विक परिस्थितियाँ सदैव एक समान नहीं रहती है, इसलिए बदलती अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में राष्ट्रीय हितों के दृष्टिकोण से समयानुसार विदेश नीति में परिवर्तन होना स्वाभाविक है।

विदेश नीति के माध्यम से प्रत्येक देश अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा तथा अभिवृद्धि सुनिश्चित करता है। भारत भी अपनी विदेश नीति को अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के संदर्भ में निर्धारित और लागू करता है। भारत ने शुरू से ही स्वयंम को गुटों की राजनीति से अलग रखा है। और यह नीति समय की कसौटी पर खरी भी उतरी है। राष्ट्रों की पारस्परिक निर्भरता के युग में भारत सभी देशों के साथ शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व

पर आधारित मैत्री को प्रोत्साहित करने वाली विदेश नीति पर चलता आया है। विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय संगठनों में भी भारत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है।

विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत विश्व में सुदृढ़ एवं सशक्त विदेश नीति के लिए जाना जाता है, साथ ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुकूल अपना सामंजस्य स्थापित करने में भी भारतीय विदेश नीति सदैव सफल रही है। 1947 से अब तक भारत को विदेश नीति के क्षेत्र में कई मुकाम हासिल हुए है, और अनेकानेक चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा है। भारत की विदेश नीति का विश्व व्यवस्था, द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय सम्बन्धों, नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था आदि के निर्धारण में महत्वपूर्ण स्थान है। विदेश नीति के निर्धारण में सबसे ज्यादा प्रभावशाली तत्व राष्ट्रीय हित कहा जाता है। भारतीय विदेश नीति के आधार व स्वरूप के निर्धारण में भी राष्ट्रीय हितों की सर्वाधिक भूमिका है और इसके अलावा हमारे पड़ौसी राष्ट्रों से हमारे सम्बन्ध तथा विश्व व्यवस्था के संचालन में हमारी भूमिका आदि का भी भारतीय विदेश नीति के निर्धारण में प्रमुख योगदान है।

भारतीय विदेश नीति की विकास यात्रा :–

स्वतंत्रता से वर्तमान तक भारतीय विदेश नीति का निरंतर विकास हुआ है। यह एक गतिहीन विदेश नीति न होकर गतिशील विदेश नीति है। जैसे–जैसे भारत के राष्ट्रीय हितों में अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन आया, विदेश नीति का स्वरूप भी बदलता गया और मूल सिद्धान्तों से विचलित हुए बिना अपने दृष्टिकोण में यथार्थवादी हो गई है।

द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीकी राष्ट्रों में स्वतंत्रता के सूर्य का उदय हुआ और तीसरी दुनिया के इन राष्ट्रों ने स्वतंत्र विदेश नीतियाँ अपनायी। अधिकांश नवोदित राष्ट्रों ने अपने आपको शीतयुद्ध की खींचतान से निरपेक्ष रखने का निर्णय लिया। इस क्षेत्र में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने मार्ग–दर्शन किया और गुटनिरपेक्षता की आवाज बुलंद की।

➢ पं. जवाहरलाल नेहरू ने गुटनिरपेक्षता को भारत की विदेश नीति का ठोस आधार बनाया और गुलामी की जंजीरों से मुक्त होने वाले एशियाई और अफ्रीकी देशों को एक अन्तर्राष्ट्रीय बल बनाने का आह्वान किया। इस आंदोलन में धीरे–धीरे नव स्वाधीन देश शामिल होने लगे और एक तीसरी शक्ति का उदय हुआ।

नेहरू ने भारत की शक्ति देश की समृद्ध एवं गहन सभ्यता की संपदा में देखा जिसे हम आज राजनीतिक विज्ञान की भाषा में नरम शक्ति (Soft Power) मानते हैं। नेहरू ने गुटनिरपेक्षता के पश्चात् शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के पाँच सिद्धान्तों अथवा पंचशील की नीति का प्रतिपादन किया। उन्होंने एशिया व अफ्रीका के नव स्वतंत्र राष्ट्रों की एकता पर बल दिया व भारत को महाशक्ति बनाने का सपना देखा। परन्तु 1962 में भारत पर चीनी आक्रमण से नेहरू की विदेश नीति को गहरा झटका लगा। अत्यधिक आदर्शवादी और भावना प्रधान विदेश नीति की कुछ असफलताओं के कारण उनके निधन के पश्चात् लाल बहादुर शास्त्री व इंदिरा गाँधी ने यथार्थवादी नीतियाँ अपनायी।

➢ लाल बहादुर शास्त्री के प्रधानमंत्रित्व काल में विदेश नीति के प्रत्येक निर्णय कैबिनेट की सलाह से लिये जाते थे। इस काल में सरकार द्वारा अपने पड़ौसी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध कायम करने के लिए विशेष कदम उठाये गये तथा आधुनिक अस्त्र–शस्त्रों से प्रतिरक्षा सेनाओं को तैयार करने पर भी ध्यान दिया गया। 1965 में भारत–पाकिस्तान युद्ध और तत्पश्चात् ताशकंद समझौता हुआ।

➢ इंदिरा गाँधी के कार्यकाल (1966–77 व 1980–84) में भारत की विदेश नीति में कुछ नवीन विशेषताएँ–लचीलापन, यथार्थ व आदर्श का समन्वय, राष्ट्रीय हितों पर बल, आर्थिक सहयोग का महत्त्व तथा विशेषज्ञों की भूमिका ऊभर कर सामने आई। भारत–सोवियत संघ मैत्री संधि–1971, भारत–पाकिस्तान युद्ध 1971 के बाद बांग्लादेश का उदय, शिमला समझौता व परमाणु परीक्षण (18 मई, 1974) भारतीय विदेश नीति की महत्त्वपूर्ण सफलताएँ थी।

➢ जनता पार्टी काल (1977–79) में 'वास्तविक गुटनिरपेक्षता' की नीति का पालन तथा पड़ौसी देशों से आत्मीय संबंध बनाने हेतु गंभीर प्रयास किये गये।

➢ राजीव गाँधी काल (1984–89) में उन्होंने आदर्शवाद व यथार्थवाद दोनों का अनुसरण करके विदेश नीति में अपना सामर्थ्य दिखाया। उन्होंने नेहरू के रास्ते पर चलते हुए तथा इंदिरा गाँधी द्वारा समर्पित गुट निरपेक्षता का अनुसरण करते हुए समकालीन आयाम के साथ भारतीय विदेश नीति में थोड़ा परिवर्तन किया। इस काल में चार मुख्य तत्वों–निःशस्त्रीकरण, उपनिवेशवाद–उन्मूलन, विकास तथा शांति की कूटनीति पर सर्वाधिक बल दिया गया। क्षेत्रीय सहयोग के लिए सार्क का निर्माण किया गया, जिसमें राजीव गाँधी की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। श्रीलंका में शांति–सेना भेजना उनकी विदेश नीति की असफलता का उदाहरण माना जाता है।

➢ शीतयुद्ध के बाद विदेश नीति :– 1991 में एक कड़वी वास्तविकता जिसे भारत को सामना करना था, वह यह थी कि सोवियत संघ और शीतयुद्ध दोनों ही समाप्त हो गये थे और संयुक्त राज्य अमेरिका ही एकमात्र महाशक्ति के रूप में एक ध्रुवीय विश्व–व्यवस्था का निर्देशक बन गया। भारत की आर्थिक समस्याओं ने भारत को अपनी विदेश नीति पर पुनः विचार करने के लिए बाध्य किया। क्योंकि पूर्व नीतियाँ भारत की समकालीन घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में अपर्याप्त सिद्ध हुई थी।

शीतयुद्ध की समाप्ति का गुट निरपेक्षता की प्रासंगिकता पर सीधा प्रभाव पड़ा लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री (1991–96) पी.वी. नरसिम्हा राव सरकार ने प्रयास किया कि सरकार गुट निरपेक्षता की नीति को अनुकूल बनाए रखेगी। 1991 में नरसिम्हा राव ने विखण्डित राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण के लिए अर्थशास्त्री मनमोहन सिंह को वित्त मंत्री नियुक्त किया। इस समय तक राज्यों के कार्यों में बढ़ोत्तरी व लोककल्याणकारी भूमिका में वृद्धि होने से सभी देशों को अन्तर–निर्भर होना पड़ा व परस्पर संबंध आवश्यकता हो गई थी। इसी के परिणामस्वरूप 1991 में भारत ने एक नई आर्थिक नीति की घोषणा की जिसने पूँजीवाद के पक्ष में समाजवाद को त्याग दिया व आर्थिक उदारीकरण की शुरूआत हुई। बदलते विश्व परिदृश्य व भारत की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उदारीकरण एक महत्त्वपूर्ण निर्णय था।

1991 में ही भारतीय विदेश नीति में दक्षिण–पूर्व एशियाई राष्ट्रों के साथ सहयोग बढ़ाने के लिए 'पूर्व की ओर देखो' नीति घोषित की गई। इन राष्ट्रों के साथ भारत के अतीत में लंबे समय तक सांस्कृतिक और सामाजिक संबंध थे तथा वहाँ चीन के प्रभाव को भी कम करना था। 1996 में इन्द्र कुमार गुजराल ने विदेश मंत्री के रूप में दक्षिण एशियाई देशों के साथ मधुर संबंध बनाने के लिए 'गुजराल सिद्धान्त' की घोषणा की थी।

➢ अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्री काल (1998–2004) में मई 1998 में भारत ने द्वितीय परमाणु परीक्षण कर विश्व समुदाय को चौंका दिया था। विश्व के अधिकांश देशों ने भारत की आलोचना की तथा भारत को जारी सहायता व अनुदान रोक दिये गये। अमेरिका द्वारा कई प्रकार के आर्थिक प्रतिबंध आरोपित किये गये। अंतर्राष्ट्रीय आलोचना, आर्थिक प्रतिबंधों, पड़ौसी देशों के साथ तनाव के वातावरण में भारतीय विदेश नीति के समक्ष कई चुनौतियाँ विद्यमान थी। इन चुनौतियों से निपटने के उद्देश्य से वाजपेयी सरकार द्वारा विदेश नीति का पुनर्मूल्यांकन करते हुए भारत की अंतर्राष्ट्रीय छवि को पुनः मुखरित करने के प्रयास आरंभ किये गये। इन प्रयासों को सफलता मिली तथा शनैः शनैः भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गई, जिससे भारत का कद और ऊँचा हुआ।

➢ संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार (2004–2014) ने वैश्वीकरण के दौर में उदारीकरण की नीति को जारी रखा व उसे गति प्रदान की। इस काल में भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ व आसियान के साथ संबंधों को मजबूत किया। भारत–अमेरिका परमाणु समझौता (जुलाई 2005) इस काल में बड़ी सफलता थी, क्योंकि भारत के NPT व CTBT पर हस्ताक्षर न करने के बावजूद अमेरिका ने परमाणु समझौता किया। सुरक्षा परिषद् में स्थायी सदस्यता के लिये औपचारिक दावेदारी पेश की तथा विभिन्न देशों से सहमति बनाने में सफलता प्राप्त की। इस काल में पड़ौसी देशों के साथ संबंधों में गुणोत्तर सुधार हुआ। भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गई, जिससे वैश्विक परिदृश्य में भारत का कद और ऊँचा हुआ। भारत, चीन, ब्राजील, रूस व दक्षिण अफ्रीका ने ब्रिक्स (BRICS) संगठन (2010) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य सदस्य देशों के मध्य पारस्परिक लाभकारी सहयोग को बढ़ाकर विकास को गति प्रदान की जा सके।

इस काल में जी–20, जी–8 व शंघाई सहयोग संगठन में भी भारत ने प्रभावी भूमिका अदा की व वैश्विक परिस्थितियों में भारत का कद ऊँचा हुआ।

नरेन्द्र मोदी शासन काल में भारतीय विदेश नीति :–

भारतीय राजनीति ने 2014 में एक मौलिक परिवर्तन देखा, जब 30 सालों बाद एक दल को संसद में पूर्ण बहुमत मिला। 26 मई, 2014 को प्रधानमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में नरेन्द्र मोदी ने सार्क देशों के प्रमुखों को आमंत्रित कर अपनी विदेश नीति की दिशा का स्पष्ट संकेत दिया था कि दक्षिण एशियाई पड़ोसी देश उसकी राजनयिक प्राथमिकता में कितना महत्त्व रखते हैं। मोदी सरकार की विदेश नीति को मोदी सिद्धान्त भी कहा जाता है। इसका तात्पर्य ऐसी नीतियों की पहल से है जो मुख्यतया संबंधों को सुधारने के प्रति केन्द्रित है। पड़ौसी देशों के प्रति केन्द्रित नीति, पूर्व देशों के प्रति नीति, समानान्तर कूटनीति, त्वरित कूटनीति एवं भारत का एशिया में प्रभाव को कायम रखना मोदी की विदेश नीति के प्रमुख घटक रहे हैं।

शपथ ग्रहण से ही नरेन्द्र मोदी ने विदेश नीति को अपने प्रशासन का आधार बना दिया है। वह विदेश नीति और घरेलू परिवर्तन के बीच एक करीबी गठजोड़ स्थापित करने में काफी सफल रहे हैं। उन्होंने भारतीय उत्पादों के लिए विदेशी बाजार खोलते हुए विदेशी पूँजी और तकनीक को आकर्षित करने का प्रयास किया है। उन्होंने मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटी, स्वच्छ गंगा, स्वच्छ भारत और कौशल भारत जैसे अपने सरकार के प्रमुख कार्यक्रमों का आक्रामक रूप से विपणन किया है। सरकार ने अपनी नीतियों के द्वारा विश्व के सभी राष्ट्रों से सम्पर्क साधे हैं। पूर्वी एशियाई देशों के साथ मजबूती प्रदान करते हुए 'लुक ईस्ट पॉलिसी' को 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' में प्राथमिकता से बदला है।

मोदी शासनकाल में ''भारत पहले' व आंतकवाद के प्रति 'शून्य सहायता' की नीति रही है। चीन के साथ डोकलाम विवाद व आंतकवादियों के खिलाफ पाकिस्तान में 'सर्जिकल स्ट्राईक' जैसे मामलों में आक्रामक विदेश नीति का परिचय दिया है। भारत के सबसे पुराने व विश्वसनीय मित्र रूस के साथ संबंधों को प्रगाढ़ करने का प्रयास किया है, जिसके साथ शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद रिश्तों में ठहराव आ गया था।

नरेन्द्र मोदी ने दुनिया में भारत का दबदबा कायम करने के लिए आक्रामक विदेश नीति के सहारे अपनी सारी ताकत झौंक दी है। भारत एक लड़खड़ाता हुआ देश आज उभरती हुई वैश्विक ताकत में तब्दील हो चुका है।

- पड़ौस पहले नीति :–2014 में नरेन्द्र मोदी ने शपथ ग्रहण समारोह में सभी सार्क देशों के राष्ट्रध्यक्षों को आमंत्रित कर पड़ौसी देशों के साथ सम्बन्धों को सुधारने का संकेत दिया था। इसे ही पड़ौसी पहले या 'नेबर हुड फर्स्ट' नीति कहा गया है। हिन्द महासागर की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण विशेषकर श्रीलंका व मालदीव के साथ सम्बन्धों का विस्तार कर भारत ने ऐतिहासिक स्तर पर मजबूत किये हैं। इसके अलावा मोदी शासन में बिम्सटेक संगठन के देशों पर खास ध्यान दिया गया है और भारत की वर्तमान विदेश नीति में इस संगठन को प्रमुख स्थान दिया जा रहा है।

  भारत का पड़ौसी देश श्रीलंका वर्तमान में भीषण आर्थिक संकट से गुजर रहा है। महंगाई की बेतहाशा वृद्धि से खाद्य सामग्री जनता की पहुँच से दूर हो गई है तथा लोग भुखमरी का सामना कर रहे हैं। श्रीलंका में आपातकाल के पश्चात गृह युद्ध की स्थिति बन रही है। वर्तमान आर्थिक संकट के समय भारत ने श्रीलंका की सहायता के लिए जनवरी 2022 से अब तक 2.4 अरब डॉलर की राशि दी है तथा हजारों टन चावल व अन्य खाद्य सामग्री भेज रहा है। भारत की यह सहायता हमारे सभी पड़ौसी राष्ट्रों के लिए भाईचारे का सुगढ़ संदेश है। श्रीलंका का राजनीतिक परिदृश्य जो भी बने, उसके इस आर्थिक संकट में भारत ही उसका सबसे विश्वसनीय मित्र सिद्ध होगा।

- कोविड–19 वैश्विक महामारी के संकट के समय दूसरे देशों को मानवीय सहायता प्रदान के लिए जनवरी 2021 में भारत ने 'वैक्सिन मैत्री' पहल शुरू की है। तथा वर्तमान तक 98 देशों को लगभग 18 करोड़ खुराक की आपूर्ति की गई है। इसके तहत भारत ने 'वसुधैव कुटुम्बकम' की परम्परा के द्वारा संकटकाल में मानव जीवन बचाने की अनुठी मिसाल पेश की है। भारत की इस वैक्सिन मैत्री अभियान को 'क्वॉड' की बैठक में काफी तारीफ हुई है तथा सम्पूर्ण विश्व में इसकी प्रशंसा हुई है।

चीन के बढ़ते प्रभाव व उसकी असफल वैक्सीन नीति के बीच भारत की यह पहल अन्य देशों का भरोसा व निकटता प्राप्त करने में सफल रही है।

- फरवरी 2022 में रूस द्वारा यूक्रेन पर सैन्य आक्रमण के कारण युद्ध क्षेत्र में फंसे भारतीय नागरिकों व छात्रों को स्वदेश लाने के लिए भारत सरकार द्वारा 'ऑपरेशन गंगा' अभियान प्रारम्भ किया गया। अभियान के तहत भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रभावी व निरन्तर मॉनिटरिंग में यूक्रेन के युद्ध प्रभावित क्षेत्रों से लगभग 22500 भारतीय नागरिक व छात्रों को सुरक्षित स्वदेश वापस लाया गया है। इस अभियान में भारत द्वारा विदेशी नागरिकों की भी मदद प्रदान करने के लिए अन्य देशों द्वारा भारत की प्रशंसा की जा रही है तथा इससे वैश्विक पटल पर भारत के प्रभाव में वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष :–

विश्व के सबसे बड़े व सुदृढ़ लोकतंत्र भारत की विदेश नीति का स्वतंत्रता से वर्तमान तक निरंतर विकास हुआ है तथा यह गतिशील विदेश नीति रही है। भारत के राष्ट्रीय हितों के अनुरूप वैश्विक परिप्रेक्ष्य में विदेश नीति का स्वरूप बदलता रहा है।

नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय विदेश नीति सफलताओं के चरम पर पहुँच रही है। विश्व का प्रत्येक देश आज भारत के साथ द्विपक्षीय सम्बन्धों की स्थापना करने को आतुर है। अमेरिका व रूस जैसी महाशक्ति भी भारत के साथ सम्बन्ध बढ़ाना चाहते है। भारत अपनी विदेश नीति में व्यवहारिक दृष्टिकोण के साथ–साथ यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए राष्ट्रीय हितों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ रहा है।

नरेन्द्र मोदी शासनकाल के दौरान देश की विदेश नीति की इतने बड़े पैमाने पर मरम्मत पहले ही दुनियाभर में भारत के बढ़ते कद को लेकर वांछित परिणाम दिखा चुकी है। सही मायने में प्रधानमंत्री मोदी ने दिखाया है कि सभी तरह की कठिनाईयों और बाधाओं को दृढ़ प्रतिबद्धता और ईमानदार प्रयासों से दूर किया जा सकता है।

गत एक दशक से वैश्विक पटल पर भारत के प्रभाव में वृद्धि के साथ भारत के बारे में अन्य राष्ट्रों की सोच में भी आमूलचूल परिवर्तन हुआ है, जो भारत की गतिशील व सफल विदेश नीति का द्योतक है।

संदर्भ सूची :

1. खन्ना, वी.एन. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, विकास पब्लिकेशन हाउस प्रा.लि., नोएडा, नई दिल्ली, पंचम संस्करण–2014
2. पंत, पुष्पेश, 21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, मैग्राहिल एज्युकेशन, प्रा.लि. नोएडा, संस्करण–2020
3. वैदिक, डॉ. वेदप्रताप, मोदी की विदेश नीति वैदिक की नजर में, डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रा.लि., नई दिल्ली, संस्करण–2017
4. वर्ल्ड फोकस, भारत की विदेश नीति, भाग–1, अंक–82, जनवरी, 2019
5. वर्ल्ड फोकस, भारत की विदेश नीति, भाग–2, अंक–71, फरवरी, 2018
6. दैनिक भास्कर, 20 अप्रैल, 2022 संपादकीय पृष्ठ–4
7. राजस्थान पत्रिका, 28 जनवरी, 2021 संपादकीय पृष्ठ
8. ऑपरेशन गंगा – ईएन.एम.विकिपिडिया.ओआरजी
9. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.हिन्दी.वनइण्डिया.कॉम 23 नवम्बर, 2021
10. नरेन्द्र मोदी सरकार की विदेश नीति–डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.एचआई.एम. विकिपिडिया.ओआरजी
11. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.एमईए.गोव.इन
12. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.प्रभासाक्षी.कॉम 18 दिसम्बर, 2020
13. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.ओआरएफऑनलाईन.ओआरजी 06 अगस्त, 2019
14. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.बीबीसी.कॉम 13 जून, 2019